63

जैतून के पहाड़ पर

(26:30-46)

फसह का भोज खाने के बाद यीशु और ग्यारह प्रेरित जैतून के पहाड़ पर गतसमनी में गए जहां उसने प्रार्थना की (26:30-46)।

प्रेरितों के इनकार की घोषणा (26:30-35)

[30]फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर गए।

[31]तब यीशु ने उन से कहा; तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे; क्योंकि लिखा है, कि मैं चरवाहे को मारूंगा; और झुण्ड की भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी। [32]परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊंगा। [33]इस पर पतरस ने उस से कहा, यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएं तो खाएं, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊंगा। [34]यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही रात को मुर्गे के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा। [35]पतरस ने उस से कहा, यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तौभी मैं तुझ से कभी न मुकरूंगा: और ऐसा ही सब चेलों ने भी कहा।

आयत 30. अटारी वाले कमरे में अपनी शाम के निकट कहीं यीशु ने यूहन्ना 14-16 में लिखे गए संदेश दिए और प्रेरितों के लिए वही व्यक्तिगत प्रार्थना थी, जो यूहन्ना 17 में दर्ज है (देखें यूहन्ना 18:1)। फसह की सेवा के अन्त में यीशु और उसके प्रेरितों ने **भजन गाया**। हलेल के भजन फसह के समय गाए जाते थे (21:9, 42; 26:20 पर टिप्पणियां देखें)। हम मान सकते हैं कि यीशु और उसके चेलों ने उसी परम्परा के अनुसार किया।

फिर यह टोली यरूशलेम के एक फाटक में से निकलकर किद्रोन नामक तराई पार जाकर **जैतून पहाड़** पर चढ़ गई (24:3 पर टिप्पणियां देखें)। यीशु यहां पर प्रार्थना करने और अपने पकड़वाने वाले की प्रतीक्षा करने के लिए गया। इसके बाद की बातचीत यीशु और ग्यारह प्रेरितों के जैतून की ओर जाते समय हुई।

आयत 31. **यीशु ने उन ग्यारह को यह कहते हुए सूचित किया, "तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे।"** "ठोकर खाओगे" के लिए यूनानी शब्द (*skandalizō*) का मूल अर्थ "ठोकर" या "ठोकर का कारण" या "फंदा या जाल लगाना" है। नये नियम में इसका अधिकतर इस्तेमाल अलंकारिक रूप में हुआ है।[1] प्रेरितों के सामने शीघ्र ही ऐसी परिस्थिति आनी थी जिसे उन्हें ठोकर लगनी थी और उसके प्रति अपने समर्पण से उन्होंने गिर जाना था। आर. टी. फ्रांस का विचार था कि "मेरे विषय में" वाक्यांश इस बात का संकेत देता

है कि "उनकी असफलता न केवल अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा के भय के कारण थी, बल्कि यीशु के दुख सहने के उद्देश्य को समझने में नाकामी के कारण भी होगी।"[2]

फिर यीशु ने जकर्याह 13:7 से उद्धृत किया: "**मैं चरवाहे को मारूंगा और झुण्ड की भेड़-बकरियां तितर-बितर हो जाएंगी।**" सुस्पष्ट अर्थ में "भेड़ें" मूलतया इस्राएलियों को कहा गया था। यीशु, जो कि "चरवाहा" है (यूहन्ना 10:14; इब्रानियों 13:20; 1 पतरस 2:25) को यहां उसकी गिरफ्तारी के समय चेलों के भाग जाने की भविष्यवाणी के रूपक के रूप में इस्तेमाल किया गया। "मैं" परमेश्वर के लिए कहा गया है, जिसने पहले से ठहराया था कि यीशु लोगों के पापों के लिए दुख उठाए और मरे (देखें यशायाह 53:4, 6, 10)।

आयत 32. यीशु ने आशा और आनन्द के शब्दों के साथ दुख और उदासी का अपना संदेश दिया। एक बार फिर उसने प्रतिज्ञा की कि वह **जी उठेगा** (16:21; 17:9, 23; 20:19) और उनसे **पहले गलील** को जाएगा। उसके जी उठने के बाद एक स्वर्गदूत ने उन स्त्रियों के द्वारा जो रविवार प्रात: कब्र पर आई थीं प्रेरितों को उसकी बात याद दिलाई (28:7, 10, 16; मरकुस 16:7; देखें यूहन्ना 21:1-23)।

"से पहले जाऊंगा" का अर्थ चाहे "वहां पहले पहुंचूंगा" हो सकता है (देखें 14:22), पर यह आयत 31 के चरवाहा/भेड़ के रूपक को भी भर सकता है। चरवाहा अपने झुण्ड के आगे-आगे उनकी अगुआई करते हुए चलता है। यूहन्ना 10:4 कहता है कि वह "उन के आगे-आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे-पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं।"

आयत 33. पतरस ने उत्तर दिया, "**यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएं तो खाएं, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊंगा।**" उसकी बात ज़ोर देकर कही गई थी कि "*मैं कभी भी* ठोकर नहीं खाऊंगा!" यह पतरस की विशेषता ही लगती है जिसने वह बात बेबाकी से कह दी जिसे दूसरे प्रेरित केवल सोच ही रहे थे (देखें 14:28; 15:15; 16:16, 22; 17:4; 18:21; 19:27)।[3] यह पहली बार नहीं था, जब पतरस ने यीशु के ईश्वरीय पूर्वज्ञान के सामने उठते हुए उसकी बात काटी थी। पहले वह यीशु की अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी को चुनौती देने तक चला गया था जिसमें उसने कहा था, "हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तेरे साथ ऐसा कभी न होगा" (16:22)।

आयत 34. यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि सब प्रेरित भाग जाएंगे (26:31) परन्तु अभी के लिए उसने पतरस पर ध्यान केन्द्रित रखा: "**मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही रात को मुर्गे के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा।**" प्रभु को मालूम था कि पतरस का विरोध सच्चे मन से था; नहीं तो वह उसके प्रति अपने उत्तर में और कठोर होता।

पतरस ने यीशु का इनकार एक बार नहीं बल्कि तीन बार करना था। यीशु ने स्पष्ट किया कि पतरस द्वारा किए जाने वाले इनकार मुर्गे के दो बार बांग देने से पहले-पहले हो जाएंगे (मरकुस 14:30)। रब्बियों की परम्परा कहती है कि यहूदी लोग यरूशलेम में मुर्गे नहीं पालते थे।[4] पहली सदी में यह परम्परा थी या नहीं परन्तु यहूदी नियम रोमियों को मुर्गे पालने से रोक नहीं पाए। मुर्गे इतनी निरन्तरता से बांग देते थे कि रात के तीसरे रोमी पहर को (12:00 बजे प्रात: से 3:00 बजे प्रात:)[5] को "मुर्ग के बांग देने के समय" के रूप में जाना जाता था (मरकुस 13:35)।

यीशु ने न केवल पतरस के इनकारों की भविष्यवाणी की बल्कि विश्वासी लोगों में उसके लौट आने की भी भविष्यवाणी की। लूका 22:31, 32 संकेत देता है कि प्रभु ने पतरस के लिए

प्रार्थना की कि उसका विश्वास जाता न रहे। बाद में उसने उसको समझाया, ''जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना।''

आयत 35. सबसे बुरे परिणाम की कल्पना करते हुए, **पतरस ने उस से कहा, यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तौभी मैं तुझ से कभी न मुकरूंगा और ऐसा ही सब चेलों ने।** उसने कहा, ''हे प्रभु, मैं तेरे साथ बंदीगृह को जाने वरन मरने को भी तैयार हूं'' (लूका 22:33)। यीशु के प्रति पतरस का समर्पण यीशु के प्रति उसके शत्रुओं पर उसके तलवार चलाने से स्पष्ट होता है (यूहन्ना 18:10); वह उसके लिए लड़ने को तैयार था। परन्तु बाद में पतरस दूसरों के साथ भाग गया (मरकुस 14:50) और अन्त में उसने उसका इनकार किया (मत्ती 26:69-75)।

सब चेलों ने यीशु के प्रति अपने पक्के समर्पण को व्यक्त किया, पर लगा कि पतरस का समर्पण और भी पक्का है (मरकुस 14:31)।

निराशा का समय
(26:36-38)

[36]तब यीशु अपने चेलों के साथ गतसमनी नाम एक स्थान में आया और अपने चेलों से कहने लगा कि यहीं बैठे रहना, जब तक कि मैं वहां जाकर प्रार्थना करूं। [37]और वह पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों को साथ ले गया, और उदास और व्याकुल होने लगा। [38]तब उसने उनसे कहा; मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकलना चाहते हैं: तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।

आयत 36. जैतून के पहाड़ पर चढ़ने के बाद **यीशु और ग्यारह जन गतसमनी नामक एक स्थान** पर पहुंचे। नये नियम में ''गतसमनी'' नाम केवल दो बार मिलता है (26:36; मरकुस 14:32)। यह इब्रानी/अरामी भाषा के दो शब्दों का लिप्यंतरण है जो मिलकर ''कोहलू'' का अर्थ देता है। बहुत अधिक सम्भावना है कि गतसमनी में जैतून का तेल निकालने के लिए अपना कोहलू था। यूहन्ना 18:1, 26 इस स्थान को ''बारी'' (*kēpos*) के रूप में बताता है जो किसी भी अत्यधिक उपजाऊ क्षेत्र के लिए हो सकता है। यहां पर *kēpos* का अर्थ ''जैतून के वृक्षों के बाग'' के लिए हो सकता है (NLT)। गतसमनी का मालिक कोई चेला हो सकता है जिसने यीशु और उसके साथियों को पर्व के समय के दौरान वहां रुकने दिया। कई आयतें इस बात का संकेत देती हैं कि यह वह स्थान था जहां प्रभु और उसके चेले आते रहते थे। यह तथ्य हमें बताता है कि यहूदा को कैसे पता चला कि प्रभु कहां मिलेगा (यूहन्ना 18:2; देखें लूका 22:39)।

उस स्थान पर जिसे अधिकतर लोग गतसमनी का स्थान मानते हैं, ''द चर्च ऑफ़ ऑल नेशन्स'' नामक गिरजाघर बना है। इसके निकट पत्थर की चारदीवारी वाला एक छोटा सा बाग है। इस इलाके में कुछ प्राचीन जैतून के पेड़ अभी भी हैं। कइयों का दावा है कि ये पेड़ मसीह के समय के हैं। परन्तु उस काल के पेड़ों को यरूशलेम की घेराबंदी और विनाश के समय रोमियों द्वारा काट दिया गया था (ईस्वी 70)।[6] यह हो सकता है कि इन पेड़ों की जड़ें (चाहे अधिक बढ़ा चढ़ाकर) रह गई हों और वे पेड़ बन गई हों, जो अब वहां हैं।

पास के इलाके में एक गुफ़ा है जो गतसमनी का एक और सम्भावित स्थान बताया जाता

है। माइकल जे. विलकिंस ने इस जगह को पहले वाली जगह से अधिक प्रामाणिक के रूप में देखता है:

> दूसरी जगह शायद अधिक आशाजनक है जो पारम्परिक बाग से कुछ सौ फुट उत्तर की ओर जैतून के पहाड़ से थोड़ा सा नीचे है। यह गुफ़ा काफ़ी बड़ी है जिसका आकार 36×60 फुट के लगभग (11 बाई 18 मीटर) है, जिसकी भीतरी गुफ़ा कोहलू लगाने के लिए दीवारों में काटी गई है।[7]

कोहलुओं का इस्तेमाल जैतून की खेती के बाद बरसात और सर्दी के मौसम में ही होता था, इसलिए फसह के समय बसंत के दौरान यह गुफ़ा खाली होती होगी। यीशु और उसके चेलों के लिए सोने के लिए गरमायश भरे सूखे मौसम के कारण रात बिताने के लिए यह आकर्षित जगह होगी। शायद यीशु के प्रार्थना करते समय चेले इस शीत रात को यहीं पर सौ गए थे (यूहन्ना 18:18)।[8] इसी से पता चल जाएगा कि एक जवान चेला "मलमल की चादर" (*sindōn*) या "चोगा" क्यों पहने हुए था, जब भीड़ यीशु को पकड़ने के लिए आई थी (मरकुस 14:51)। कइयों का मानना है कि यह जवान स्वयं मरकुस ही था, क्योंकि इस घटना का उल्लेख करने वाला सुसमाचार का लेखक केवल यही है। यदि मरकुस या जो भी जवान यीशु और प्रेरितों के साथ वहां था, तो दूसरे लोग भी उनके साथ होंगे।

गतसमनी में थोड़ी दूर जाने के बाद [यीशु] **अपने चेलों से कहने लगा कि यहीं बैठे रहना, जब तक कि मैं वहां जाकर प्रार्थना करूं**। उसने उन्हें उपदेश दिया, "प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो" (लूका 22:40)।

आयत 37. फिर **वह पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों** [अर्थात याकूब और यूहन्ना को] **को साथ ले गया,** और "एक ढेला फैंकने की दूरी पर" थोड़ा आगे गया (लूका 22:41)। ये तीनों प्रेरित प्रभु के निकटतम मित्र थे (17:1 पर टिप्पणियां देखें)। यीशु के साथ उनका होना उसकी सहायता और शांति के इरादे से था। यहां पर यीशु **उदास और व्याकुल होने लगा**। यह भाषा क्रूस के सताव का सामना करते समय मसीह के मनुष्य होने की बात को पकड़ती है। परन्तु उसने क्रूस पर चढ़ाए जाने के शारीरिक और भावनात्मक दुख को ही नहीं सहना था, उसने संसार के पाप को भी उठाना था (2 कुरिन्थियों 5:21) और अपने पिता से अलग होना था (27:46)। डेविड हिल ने यीशु की स्थिति का वर्णन "उसके जो अभी भी परमेश्वर में आशा रखता है, परन्तु जानता है कि क्रूर मृत्यु उसके सामने है, दुख भरे आज्ञापालन" के रूप में किया।[9]

आयत 38. यीशु ने अपने तीनों साथियों से कहा, **"मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकलना चाहते हैं।"** JNT में है "मेरा मन इतना दुख से भरा है कि मैं मर सकता हूं!" यीशु की बात का पहला भाग भजन संहिता की ओर पीछे को संकेत करता है जहां पर लेखक ने पूछा था, "हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है?" (भजन संहिता 42:5, 11; 43:5)। भजनकार ने बार बार अपने आपको परमेश्वर में आशा रखने की बात याद दिलाई, जिसने उसे छुड़ा लेना था।

यीशु ने अपने तीनों चेलों से कहा, **"तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।"** इस कठिन समय में उसे मित्रों की सहायता की आवश्यकता थी, पर वे सहायता देने में बुरी तरह से

नाकाम रहे (26:40, 43, 45)।

प्रार्थना का समय (26:39-46)

[39]फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा, और यह प्रार्थना करने लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो। [40]फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया, और पतरस से कहा; क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके? [41]जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो: आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है।

[42]फिर उस ने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की; कि हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो। [43]तब उस ने आकर उन्हें फिर सोते पाया, क्योंकि उन की आंखें नींद से भरी थीं। [44]और उन्हें छोड़कर फिर चला गया, और वही बात फिर कहकर, तीसरी बार प्रार्थना की। [45]तब उस ने चेलों के पास आकर उन से कहा; अब सोते रहो, और विश्राम करो: देखो, घड़ी आ पहुंची है, और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है। [46]उठो, चलें; देखो, मेरा पकड़वाने वाला निकट आ पहुंचा है।

आयत 39. उसके पहरेदार होने के लिए पतरस, याकूब और यूहन्ना के चले जाने के बाद, यीशु **थोड़ा और आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा**। उसकी सेवकाई के दौरान अनगिनत लोग यीशु के पास आते और उसके सामने गिर जाते थे (2:11; 8:2; 9:18; 17:6; मरकुस 3:11; 5:6; 10:17; लूका 5:12; 17:16)। इस बार उसने विनम्रतापूर्वक दिल से प्रार्थना में परमेश्वर के सामने अपने आपको गिरा दिया।

यीशु ने प्रार्थना की, "**हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।**" "कटोरा" जिसकी बात यीशु ने की वह दुख और मृत्यु का कटोरा है। उसने इसी भाषा का इस्तेमाल याकूब और यूहन्ना के अपनी माता के द्वारा उससे यह पूछने के समय किया था कि क्या वे राज्य में उसके दाएं और बाएं बैठ सकते हैं? उसने उनसे पूछा, "जो कटोरा मैं पीने को हूं, क्या तुम पी सकते हो?" (20:22)। पुराने नियम के शब्दों में "कटोरा पीना" का अर्थ अच्छा हो या बुरा हर हाल में जो भी हो उसे पूरी तरह से सहना था (भजन संहिता 11:6; 16:5; 23:5; 75:8; 116:13; यशायाह 51:17; यिर्मयाह 16:7; 25:15)। यीशु का मानवीय स्वभाव उस आतंक में दिखाया गया जो गुलगुता में उन पर आने वाला था, परन्तु इस दर्दनाक मृत्यु से हटाए जाने की उसकी इच्छा उसके पिता की इच्छा पूरी करने की उसकी इच्छा पर हावी हो गई थी (देखें 6:10)।

आयत 40. चाहे तीनों ही प्रेरित **सोते हुए** मिले थे पर यीशु ने पहली टिप्पणी **पतरस** के लिए दी। यह टोली में उसके प्रभाव के कारण या आवश्यकता पड़ने पर यीशु के साथ मर जाने के उसके साहस पर ज़ोर देने के कारण हो सकता है (26:33, 35)। फिर, प्रभु ने उससे पूछा, "**क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके?**" उसे बड़ा दुख हुआ होगा कि उसके सबसे नज़दीकी दोस्त उसके प्रार्थना करते समय एक घड़ी या एक घण्टा भी नहीं जाग पाए थे।

नये नियम में सोने का इस्तेमाल कई बार उन लोगों के लिए रूपक में हुआ है जो बेपरवाही

से जीवन बिता रहे हैं और जिन परिस्थितियों में हैं उन पर सही ध्यान नहीं दे रहे। सोने के बजाय मसीही लोगों को जागने और खबरदार रहने को कहा गया है (रोमियों 13:11; 1 कुरिन्थियों 11:30; इफिसियों 5:14; 1 थिस्सलुनीकियों 5:4-8)।

आयत 41. एक बार फिर यीशु ने इन प्रेरितों को **जागते रहो** का आग्रह किया (देखें 26:38)। उसने उन्हें **परीक्षा** में पड़ने से बचने के लिए **प्रार्थना** करते रहने को कहा (देखें 6:13)। उन पर कौन सी परीक्षा आनी थी? उसके कहने का अर्थ यही होगा कि उन पर वही परीक्षा आएगी, जो उन्होंने किया था कि वे उसे छोड़कर भाग जाएं (मरकुस 14:50)।

यीशु ने माना कि **आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है**। "आत्मा" (*pneuma*) यहां पर हमारे अस्तित्व को अर्थात उस प्राण को कहा गया है, जो हमें चलाता और हमें जीवन देता है। यह हमारी समझ, इच्छा और भावना का देने वाला है।

यहां "शरीर" (*sarx*) "शारीरिक देह" को ही कहा गया हो (NIV; NLT) जो कमज़ोर है और थक जाती है (देखें 26:43)। कई संस्करणों में इस शब्द का अनुवाद "मानवीय स्वभाव" (NJB; JNT) के रूप में अधिक संक्षेप में किया गया है, जिससे बुराई करने की भीतरी इच्छा का संकेत मिल सकता है। यह बाद वाला अनुवाद शायद ही मूल अर्थ को समझा पाता हो।

आयत 42. **दूसरी बार** यीशु ने यह कहते हुए प्रार्थना की, "**हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।**" इस बार मुख्य भाग "यह कटोरा मुझ से टल जाए" (26:39) से "तेरी इच्छा पूरी हो" तक बदल गया।

आयत 43. अपने प्रेरितों की ओर मुड़ते हुए एक बार फिर यीशु ने **उन्हें फिर सोते पाया, क्योंकि उन की आंखें नींद से भरी थीं**। स्पष्टतया उसने उनसे बात की, क्योंकि मरकुस 14:40 कहता है कि वे "नहीं जानते थे कि उसे क्या उत्तर दें।" वे थके हुए ही नहीं थे; वे "उदासी के मारे" सो रहे (लूका 22:45) थे। वे उस दिन बहुत थक गए थे और उनकी भावनाएं जवाब दे गई थीं। कई बार परेशानी से हमें नींद आने लग सकती है; परन्तु इससे निराशा भी हो सकती है, जैसा कि लूका की बात से संकेत मिलता है कि प्रेरितों को हुई थी।

आयत 44. यीशु **उन्हें छोड़कर फिर चला गया, और वही बात फिर कहकर, तीसरी बार प्रार्थना की**। उसने दिल से पिता से दुख और मृत्यु के अपने कटोरे को हटाने के लिए तीन बार प्रार्थना की। उसकी प्रार्थनाओं की गम्भीरता को लूका द्वारा प्रकाशमान किया गया "और वह अत्यन्त संकट में व्याकुल होकर और भी हृदय वेदना से प्रार्थना करने लगा और उसका पसीना मानो लोहू की बड़ी बड़ी बून्दों की नाईं भूमि पर गिर रहा था" (लूका 22:44)।[10] लूका ने यह भी लिखा है कि उसकी प्रार्थनाओं के दौरान एक स्वर्गदूत आकर उसे सामर्थ देता था (लूका 22:43)।[11]

यीशु कोई कट्टर शहीद नहीं था जिसने मृत्यु का स्वागत किया हो। उसने अपने आपको इस लिए दे दिया, क्योंकि परमेश्वर के क्रोध को शांत करने और संसार को पाप से बचाने का केवल यही एकमात्र ढंग था (यूहन्ना 3:16, 36; 1 यूहन्ना 2:1, 2)। दुखों और मृत्यु के कटोरे को टाला नहीं जा सकता था।

अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा यीशु ने पिता की इच्छा को अपनी इच्छा के ऊपर हावी होने दिया। गतसमनी बाग में उसका विनम्रता से स्मर्पण अदन के बाग में आदम और हव्वा की खुली चुनौती

के बिल्कुल अलग था। डग्लस आर. हेयर ने कहा है, ''मसीही लोगों के लिए गतसमनी का बाग अदन के बाग का उलट है।''

आयत 45. प्रार्थना करने के बाद यीशु ने अपने चेलों को बताया कि **घड़ी आ पहुंची** [थी] (26:18 पर टिप्पणियां देखें)। **मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया** जा रहा [था]। पृथ्वी पर यीशु के उद्देश्य के पूरा होने का समय आ पहुंचा था। उन्हें जिनको अपने साथ जागते रहने को कहा था जगाते हुए, उसे पकड़ने के लिए भीड़ आ पहुंची।

आयत 46. यीशु ने ज़ोरदार ''**उठो**'' के साथ प्रेरितों को नींद से जगाया। पिता की इच्छा को पूरा करने और उस मृत्यु लिए सौंप देने का जो उसकी राह देख रही थी, समय आ पहुंचा था। उसका पकड़वाने वाला निकट था। चेलों को पूरी तरह से जागना आवश्यक था ताकि वे उस नाटक में जिसका पर्दा खुलने को था सक्रिय रूप से भाग ले सकते।

टिप्पणियां

[1]मत्ती रचित सुसमाचार में यह शब्द कई बार मिलता है (5:29, 30; 11:6; 13:21, 57; 15:12; 17:27; 18:6, 8, 9; 24:10; 26:31, 33)। [2]आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 370. [3]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 777. [4]मिशनाह *बाबा कामा* 7.7; टालमुड *बाबा कामा* 82बी। [5]14:25 पर टिप्पणियां देखें। [6]जोसेफस *वार्स* 5.12.4. [7]*जॉर्डरवन इलस्ट्रेटिड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉर्डरवन, 2002), 166 में माइकल जे. विलकिंस, ''मैथ्यू।'' [8]इस गुफा के साथ गतसमनी के सम्बन्ध से जुड़ी और जानकारी के लिए, देखें जोन ई. टेलर, ''द गार्डन ऑफ़ गैथसेमनी: नॉट द प्लेस आफ जीज़स' अरेस्ट,'' *बिब्लिकल आर्कियोलॉजी रिव्यू* 21 (जुलाई/अगस्त 1995), 26–35, 62. [9]डेविड हिल, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 341. [10]कइयों का मानना है कि लहू मिला यीशु का पसीना ''हिमोसाड्रोसिस'' या ''हिमाटाइड्रोसिस'' नामक चिकित्सीय परिस्थिति के कारण हुआ। ऐसा तब होता जब व्यक्ति इतने तनाव में हो कि त्वचा के पास की छोटी छोटी नसें फट जाएं पर लहू पसीने के साथ मिलकर त्वचा के छिद्रों में से रिसता है। कइयों का यह मानना है कि लूका का विवरण केवल एक तुलना (उपमा) है: यीशु का पसीना लहू की बूंदों ''के समान'' (*hōsei*) था। वो शायद भूमि पर इसके गिरने के आकार या ढंग जैसा था। अन्य शब्दों में उसका पसीना बहुत मात्रा में बह रहा था।

[11]लूका 22:43, 44 वचन की एक समस्या दिखाता है। यूनाइटेड बाइबल सोसाइटी द्वारा मुद्रित यूनानी धर्मशास्त्र में इन आयतों के गिर्द दोहरे कोष्ठक रखकर उनके लगभग पक्के तौर पर लूका की मूल प्रति में न होने का निर्णय दिया गया है। [12]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 303. देखें रोमियों 5:19.